B-2
L-20
Modern
India

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन के योगदान की समीक्षा

- आधुनिक भारत के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को जन्म देने तथा राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी अर्थात् यह आंदोलन हमारी राष्ट्रीय पहचान से जुड़ गया। वस्तुतः इस आंदोलन ने भारत की सामाजिक-धार्मिक समस्याओं के माध्यम से व्यापक राष्ट्रीय स्तर पर सबको जोड़ने का कार्य किया और एक भारतीय पहचान निर्धारित कर दी।

- इस आंदोलन ने 19 वीं-20 वीं सदी की रूढ़िवादी मान्यताओं और उसकी धार्मिक व्याख्याओं पर बौद्धिक प्रश्नचिन्ह लगा दिया तथा अब परम्परा व अंधविश्वास की जगह तर्क व विवेक आधारित मूल्यों को अपनाने की

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Platform KHAN SIR

बात कही जाने लगी। यह विचारणीय बन गया कि, "सत्य की एकमात्र कसौटी यह है कि वह तर्कसंगत व विवेकपूर्ण हो।"

- वस्तुतः इस आंदोलन ने भारत की सामाजिक जड़ता को हटाने का प्रयास किया। सुधारकों का स्पष्ट मानना था कि जो भारतीय समाज अपनी वैज्ञानिकता खो बैठा है, गतिहीन हो चला है उसे तार्किक व गतिशील बनाने की सर्वाधिक आवश्यकता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

- इस आंदोलन ने समाज सुधार के लिए शिक्षा को सबसे अनिवार्य तत्व माना और विशेषतः नारी शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित किया। बालिका शिक्षा के लिए विशिष्ट स्कूल व कॉलेज खोले जाने लगे जिसकी शुरुआत ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के सहयोग से बेथून कॉलेज की स्थापना से हुई।

यह केवल समाज का ही नहीं बल्कि राष्ट्र के लोकतांत्रिकरण का भी प्रतीक था।

- वास्तव में तत्कालीन समाज की दुर्दशा का मूल कारण अशिक्षा व अजागरूकता ही थी जिसे सुधारकों ने सबसे प्रमुख सुधार का बिन्दु माना।
- भारतीय समाज का एक बड़ा वर्ग जिसे निम्न वर्ग कहकर समाज की मुख्यधारा से बाहर कर दिया गया था और यहां तक कि उन्हें मानवाधिकारों से भी वंचित कर दिया गया था, इस आंदोलन ने उनको उचित प्रतिनिधित्व देने की माँग की और डा० अम्बेडकर ने तो इस विषय को अपनी जिन्दगी का मिशन ही बना लिया।
- इस आंदोलन ने सदियों से सोई हुई भारतीय चेतना तथा अंग्रेजों द्वारा अपनी नस्लीय श्रेष्ठता के प्रसार से जो भारतीयों का आत्मविश्वास खो चुका था, विवेकानंद जैसे दार्शनिकों के वक्तव्यों

KGS IAS

तथा भारत के गौरवमयी अतीत की खोज से पुनः वापस लौटने लगा और भारतीय अपने शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने को सक्षिप्त हो उठे। इसीलिए कहा जाता है कि भारत की राष्ट्रवादी चेतना की उत्पत्ति सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों के गर्भ से हुई।

- संवैधानिक और कानूनी प्रयासों से भी सामाजिक सुधारों को आगे बढ़ाया गया और न केवल सतीप्रथा निषेध, विधवा पुनर्विवाह अधिनियम बल्कि कन्या भ्रूण हत्या व बालिका विवाह की उम्र निर्धारित करने का भी कानून पारित किया गया।

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन की कमियां / आलोचना

- इस आंदोलन की प्रमुख कमी यह मानी जा सकती है कि यह आंदोलन गाँवों और आम जनता के बीच अधिक लोकप्रिय न हो सका

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

अर्थात् यह आंदोलन शहरी व शिक्षित वर्ग तक सीमित रहा। इसीलिए कुछ विद्वान इसे नगरीय आंदोलन भी कहते हैं। इस आंदोलन ने व्यवहारिक तौर पर समस्याओं का समाधान करने में आंशिक सफलता ही अर्जित की और कई समस्याएँ तो आज के भारत में भी विद्यमान हैं।

- धार्मिक सुधारों पर अधिक बल दिए जाने के कारण धीरे-धीरे सामाजिक मुद्दे पीछे छूटने लगे और धार्मिक विषय ही महत्वपूर्ण होने लगे जिससे साम्प्रदायिक मतभेदों को बढ़ावा मिला और ये आंदोलन हिन्दू व मुस्लिम आंदोलन अधिक बन गए न कि भारतीय सामाजिक सुधार आंदोलन।
- आलोचनाओं के बावजूद आधुनिक भारत के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों को भारतीय इतिहास का एक ऐसा गौरवमयी अध्याय माना जा सकता है, जिसने सदियों से हमारी

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

सामाजिक - धार्मिक जड़ता को झकझोरा और यह सोचने पर विवश किया कि यदि भारतीय अस्मिता को बचाना है तो व्यापक स्तर पर सुधार करने ही होंगे।

प्रश्नः- विधवा पुनर्विवाह अधिनियम को पारित करना अनेक दृष्टियों से सती प्रथा निषेध को प्रभावी बनाने के लिए तार्किक व आवश्यक कदम था।

नारी सुधार आंदोलन

- 19 वीं सदी के भारत में महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे की हो चली थी और बाल विवाह, सती प्रथा, विधवाओं की दुर्दशा और अशिक्षा जैसी कुरीतियों ने महिलाओं के अधिकारों को हाशिए पर ला दिया था ऐसे में सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन के नेतृत्वकर्ताओं ने यह महसूस किया कि बिना महिलाओं की स्थिति

में सुधार के किसी भी प्रकार का आंदोलन निष्प्रभावी साबित होगा।

- अतः राजाराम मोहनराय व ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे सुधारकों के प्रयासों से ब्रिटिश सरकार ने संवैधानिक व कानूनी प्रावधानों के द्वारा इन कुरीतियों को प्रतिबंधित करने का प्रयास किया -

(i) 1829 सती प्रथा निषेध

(ii) 1856 विधवा पुनर्विवाह अधिनियम

(iii) 1804 में लार्ड वेलेजली के द्वारा कन्या भ्रूण हत्या रोकने का प्रयास और फिर 1870 में इसे राष्ट्रीय स्तर पर रोकने के लिए कानून लाया गया।

(iv) 1891 में बालिकाओं की वैवाहिक उम्र निर्धारित करने के लिए आयु सम्मत अधिनियम लागू किया गया और फिर 1929 में शारदा एक्ट द्वारा बालिकाओं के विवाह की उम्र 14 वर्ष निर्धारित कर दी गयी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

(v) महिलाओं को जागरुक बनाने के लिए विशिष्ट शिक्षण संस्थानों की स्थापना की गयी।

- महिला अधिकारों व उन्हें समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए व्यक्तिगत, संगठनिक व सरकारी प्रयासों की एक सीमा थी क्योंकि ये अधिकांश पुरुषों द्वारा या अभिजात्य वर्ग द्वारा प्रयास किए गए थे। अतः मूल समस्या का निदान न हो सका। अतः अब महिलाओं ने अपने अधिकारों की प्राप्ति का बीड़ा स्वयं उठाया और विभिन्न संस्थाओं की स्थापना से व्यवस्थित तरीके से अपनी मांग उठाने लगे।

- 1917 से 1927 के बीच तीन प्रमुख संस्थाएं चर्चित रहे:-

(i) वूमेन्स इण्डियन एसोसिएशन (WIA)
(ii) द नेशनल काउन्सिल आफ वूमेन्स इन इण्डिया
(iii) आल इण्डिया वूमेन्स कान्फ्रेंस (AIWC)

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

• मारग्रेट कजिन्स के नेतृत्व में AIWC ने राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के अधिकारों की माँग को चर्चित बना दिया और इसी संदर्भ में मद्रास विधानसभा में पहली भारतीय महिला एमएलए मुथुलक्ष्मी रेड्डी चुनी गयी और 1935 के अधिनियम से सार्वजनिक सेवाओं में महिलाओं को अवसर देने की बात कही गयी।

इस तरह अब सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलनों में नारी विषय और उनका नेतृत्व महत्वपूर्ण बनता गया और आजादी तथा उसके बाद भी महिलाओं का नेतृत्व महत्वपूर्ण परिवर्तनों के लिए अनिवार्य मान लिया गया।

सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन की उत्पत्ति के कारक

- पाश्चात्य प्रभाव
  - 1835 में आधुनिक शिक्षा प्रणाली के तहत अँग्रेजी भाषा का प्रयोग
  - भारत में मध्यम वर्ग का उदय
  - सरकारी प्रयास
  - प्राच्यविदों की भूमिका

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

स्वदेशी प्रभाव → भारतीय इतिहास एवं समाज से प्रेरित
→ विभिन्न भारतीय आंदोलनों जैसे- लिंगायत, चरणदासी एवं सतनामी आंदोलनों का प्रभाव
→ प्राचीन भारतीय ग्रंथों एवं परम्पराओं से प्रेरित

प्रश्नः- आधुनिक भारत के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन की उत्पत्ति पश्चिमी मूल्यों के बारंबार अंतः क्षेपण के द्वारा हुई।

विवेकानंद के विचारों का प्रभाव

- सुभाषचन्द्र बोस ने विवेकानंद को आधुनिक भारत का निर्माता कहा है तो गुरुदेव टैगोर ने तो यहां तक कहा कि, "यदि भारत को जानना है तो विवेकानंद के विचारों को पढ़िए।"
- विवेकानंद ने 1893 के शिकागो के धर्म सम्मेलन में, "मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
© KHAN SIR

गर्व महसूस करता हूँ, जो विश्व को सहिष्णुता व सार्वभौम स्वीकृति की शिक्षा देता हो तथा समस्त धर्मों व देशों के उत्पीड़ितों को शरण देता है।" इस वक्तव्य ने भारतीय धर्म व परम्परा की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित किया और जो भारतीय अपने धर्म व समाज को लेकर हीन भावना का शिकार हो चले थे, उनमें एक नयी ऊर्जा संचालित हुई। अतः विवेकानंद को यह महत्वपूर्ण श्रेय जाता है कि उन्होंने भारतीयों के टूटे मन को मजबूत बनाने का कार्य किया।

- विवेकानंद ने शिक्षा को समाज का रीढ़ माना और समाज के सभी वर्गों तक शिक्षा को पहुँचाने का संदेश दिया। उनका स्पष्ट मानना था कि वास्तविक शिक्षा सत्विचार व आत्मा को जोड़ने का प्रयास करती है और शिक्षा का

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

उद्देश्य मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक होना चाहिए। विवेकानंद ने समाज सुधार के लिए महिला शिक्षा को अनिवार्य माना।

- विवेकानंद ने क्रांति के लिए युवाओं को महत्वपूर्ण माना क्योंकि वे उन्हें ऊर्जा का असीम स्रोत मानते थे और युवाओं को स्पष्ट संदेश दिया कि "अपना लक्ष्य निर्धारित करो और तब तक मत रुको जब तक उसकी प्राप्ति न हो।"
- विवेकानंद स्वतंत्रता व समानता रूपी आधुनिक मूल्यों के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने स्पष्ट कहा यदि किसी व्यक्ति के स्वतंत्रतापूर्वक सम्पूर्ण विकास में कोई भी शक्ति बाधा बनती है तो उसे हटाने का प्रयास अवश्य किया जाना चाहिए। यह संदेश औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध राष्ट्रवादी भावना को प्रसारित करने का एक कारक बना।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- विवेकानंद इस अर्थ में प्रगतिशीलवादी थे कि इन्होंने पश्चिमी जगत के विज्ञान व तकनीक की उपलब्धियों के प्रति सकारात्मक भाव रखा और इनका मानना था कि पूरब का आध्यात्मवाद और पश्चिम के भौतिकतावाद के मेल से ही वास्तविक विकास संभव हो सकेगा। उन्होंने स्पष्ट कहा कि "मैं ऐसे ईश्वर को नहीं मानता जो गरीबों का पेट न भर सके।"
- विवेकानंद ने सभी धर्मों का सार 'सत्य' को माना है और वे सभी धर्मों के अनुयायियों के अपने धर्म के प्रति सम्मान रखने की भावना का समर्थन करते हैं।
- मानव सेवा को विवेकानंद ने ईश्वर की सेवा माना और स्पष्ट कहा कि, "मैं उन सभी शिक्षित व रोजगार करने वाले व्यक्तियों को देशद्रोही मानता हूँ, जिन्होंने गरीबों व

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

अशिक्षितों को सशक्त बनाने के लिए कोई प्रयास नहीं किया।" इस तरह विवेकानंद ने उन सभी आयामों पर अपने सकारात्मक विचार रखे जिससे कि प्रत्येक भारतीय को गर्व हो सके। इसी संदर्भ में उनके, "सत्य ही जीवन है", के संदेश से प्रेरित होकर राष्ट्रीय संघर्ष में उग्रवादी व क्रांतिकारी विचारों को भी बढ़ावा मिला।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR